

लोकतंत्र पर सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया ने वैश्विक स्तर पर संचार और सूचना प्रसार में क्रांति ला दी है। यह आवाज़ों को सशक्त बनाकर और बहस को सुविधाजनक बनाकर लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, लेकिन यह गलत सूचना, अभद्र भाषा और एकाधिकार नियंत्रण के माध्यम से चुनौतियाँ भी पेश करता है।

सोशल मीडिया और इसके प्रकार:

- परिभाषा: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन सामग्री बनाने, साझा करने और उससे बातचीत करने की अनुमति देता है।

- प्रकार:

- सोशल नेटवर्क: कनेक्शन के लिए Facebook, LinkedIn जैसे प्लेटफॉर्म।
- माइक्रोब्लॉगिंग साइट: त्वरित अपडेट और समाचार साझा करने के लिए X (पूर्व में Twitter) जैसे प्लेटफॉर्म।
- मीडिया साझा करने वाले प्लेटफॉर्म: दृश्य और वीडियो सामग्री के लिए Instagram, YouTube।
- चर्चा मंच: विषय-आधारित चर्चाओं के लिए Reddit, Quora।

लोकतंत्र को प्रभावित करने वाले सोशल मीडिया के हालिया उदाहरण:

1. अमेरिकी चुनाव: चुनावों के दौरान राजनीतिक अभियान और गलत सूचना फैलाने में X और Facebook ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. फिलिस्तीन संघर्ष: सोशल मीडिया ने स्थिति के बारे में वास्तविक समय के अपडेट लाए, अत्याचारों को प्रदर्शित किया और वैश्विक जागरूकता को बढ़ावा दिया।
3. श्रीलंका दंगे: फेसबुक पर स्थानीय सामग्री मॉडरेशन की कमी ने नफरत फैलाने वाले भाषणों के प्रसार को बढ़ा दिया।
4. भारत में किसान विरोध: सोशल मीडिया ने विरोध को बढ़ावा दिया, जिससे वैश्विक ध्यान और समर्थन मिला।

लोकतंत्र पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव:

- बढ़ी हुई राजनीतिक भागीदारी: नागरिकों को चर्चा में शामिल होने और सरकारों को जवाबदेह ठहराने का अधिकार देता है।

उदाहरण के लिए जलवायु विरोध के दौरान युवाओं के नेतृत्व वाले अभियान।

- वैश्विक संपर्क: सीमाओं के पार विचारों और वास्तविक समय के अपडेट को साझा करने में सक्षम बनाता है।

उदाहरण के लिए यूक्रेन-रूस संघर्ष अपडेट ने अंतर्राष्ट्रीय सहायता जुटाई।

- हाशिए पर पड़ी आवाज़ों का प्रवर्धन: कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों को अपनी चिंताओं को आवाज़ देने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए #MeToo आंदोलन ने लैंगिक न्याय के बारे में वैश्विक बातचीत शुरू की।

- पारदर्शिता और जवाबदेही: सरकारी कार्रवाइयों को सार्वजनिक जाँच के दायरे में लाता है।

उदाहरण के लिए भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले सोशल मीडिया व्हिसलब्लोअर।

- लोकतंत्र पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव:

- गलत सूचना का प्रसार: असत्यापित सामग्री जनता की राय को प्रभावित कर सकती है।

उदाहरण के लिए, कोविड-19 के दौरान फर्जी खबरों के कारण लोगों में वैक्सीन लगवाने में हिचकिचाहट हुई।

- धुवीकरण और इको चेंबर: एल्गोरिदम समान विचारधारा वाली सामग्री को बढ़ावा देते हैं, जिससे पूर्वाग्रहों को बल मिलता है।

उदाहरण के लिए, अमेरिका में पक्षपातपूर्ण राजनीतिक बहस।

- नफ़रत फैलाने वाले भाषण और अतिवाद: प्लेटफ़ॉर्म हानिकारक सामग्री को नियंत्रित करने में विफल रहते हैं।

उदाहरण के लिए, म्यांमार में रोहिंग्या संकट फेसबुक पोस्ट के कारण और बढ़ गया।

- एकाधिकार नियंत्रण: व्यक्तियों या निगमों द्वारा स्वामित्व तटस्थता को प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए, एक्स पर एलन मस्क का प्रभाव।

- सेंसरशिप: सरकारें प्लेटफ़ॉर्म नीतियों में हेरफेर करके असहमति को दबा सकती हैं।

उदाहरण के लिए, सत्तावादी शासन में विरोध प्रदर्शनों के दौरान इंटरनेट बंद करना।

सुझाए गए उपाय:

- मॉडरेशन को मज़बूत करें: नफ़रत फैलाने वाले भाषण और गलत सूचना को प्रबंधित करने के लिए स्थानीय भाषा के मॉडरेटर बढ़ाएँ।

उदाहरण के लिए, फेसबुक को क्षेत्रीय भाषाओं में धाराप्रवाह बोलने वाले मॉडरेटर नियुक्त करने चाहिए।

- एल्गोरिदम को विनियमित करें: हानिकारक सामग्री के प्रवर्धन को रोकने के लिए एल्गोरिदम को पारदर्शी बनाएं।

· विकेंद्रीकृत प्लेटफ़ॉर्म को बढ़ावा दें: एकाधिकार प्रभाव को कम करने के लिए मैस्टोडॉन और ब्लूस्काई जैसे प्लेटफ़ॉर्म को प्रोत्साहित करें।

· कानूनी सुरक्षा उपाय: फर्जी खबरें फैलाने के लिए सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए कड़े कानून बनाएं।

· मीडिया साक्षरता: स्कूल के पाठ्यक्रमों में सूचना सत्यापन तकनीकों को एकीकृत करें।

· स्वतंत्र निगरानी: प्लेटफ़ॉर्म की तटस्थता की निगरानी के लिए अंतर्राष्ट्रीय निकाय स्थापित करें।

निष्कर्ष:

सोशल मीडिया लोकतंत्र के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, जो आवाज़ को बढ़ाता है और पारदर्शिता को सक्षम बनाता है। हालाँकि, गलत सूचना और एकाधिकार नियंत्रण के माध्यम से नुकसान पहुँचाने की इसकी क्षमता विनियमन, विकेंद्रीकरण और शिक्षा की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह जिम्मेदारी से लोकतांत्रिक आदर्शों की सेवा करता है।

“नौकरियाँ आपके द्वार” रिपोर्ट

केंद्रीय मंत्री ने विश्व बैंक द्वारा “नौकरियाँ आपके द्वार” रिपोर्ट लॉन्च की।

· यह रिपोर्ट छह भारतीय राज्यों में रोजगार परिदृश्य के निदान पर केंद्रित है और शिक्षा और कौशल को भारत के रोजगार एजेंडे के साथ जोड़ने की रणनीतियों पर प्रकाश डालती है।

जॉब्स एट योर डोरस्टेप रिपोर्ट के बारे में:

· उद्देश्य: कौशल शिक्षा को रोजगार के अवसरों के साथ जोड़ने के लिए एक नैदानिक रोडमैप प्रदान करता है।

· कवरेज: छह स्टार राज्यों - हिमाचल प्रदेश, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा और राजस्थान पर केंद्रित है।

· मुख्य विशेषताएं:

○ स्कूल ट्रेडों को जिला-विशिष्ट उद्योग आवश्यकताओं के साथ जोड़कर कौशल अंतर को संबोधित करता है।

○ कौशल विकास के लिए एक निचले स्तर के दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, स्थानीय बाजार संचालित प्रशिक्षण पर जोर देता है।

○ कक्षा 9-12 के लिए स्कूली शिक्षा में कौशल को एकीकृत करता है, जिससे भविष्य के कार्यबल की तत्परता सुनिश्चित होती है।

o एनईपी 2020 के तहत 2025 तक 50% छात्रों और 2030 तक 100% छात्रों को कौशल शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने की परिकल्पना की गई है।

· स्टार्स कार्यक्रम: विश्व बैंक द्वारा समर्थित, यह योजना स्कूलों में कौशल-आधारित शिक्षा के लिए शिक्षण, सीखने और परिणामों को मजबूत करती है।

स्टार्स कार्यक्रम के बारे में: (राज्यों के लिए शिक्षण-शिक्षण और परिणामों को मजबूत करना)

· लॉन्च और अवधि: अक्टूबर 2020 में स्वीकृत, 2021 से पांच साल के लिए, वित्त वर्ष 2024-25 तक प्रभावी।

· कार्यान्वयन: शिक्षा मंत्रालय के तहत स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा वित्त पोषित विश्व बैंक से वित्तीय सहायता।

· लक्षित राज्य: स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए छह राज्यों- हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और केरल को शामिल किया गया है।

· एनईपी 2020 के साथ संरेखण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप गुणवत्ता-आधारित सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है।

· दायरा: समग्र शिक्षा से अलग किया गया, शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि से सीधे जुड़े घटकों पर जोर दिया गया।

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI), 2025

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) 2025 63 देशों और यूरोपीय संघ के जलवायु संरक्षण प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है, जो सामूहिक रूप से वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 90% से अधिक के लिए जिम्मेदार हैं।

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI), 2025 के बारे में:

· उत्पत्ति: पहली बार 2005 में प्रकाशित।

· द्वारा प्रकाशित: जर्मनवॉच, न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क।

· उद्देश्य: जलवायु शमन प्रयासों की निगरानी और तुलना करना तथा वैश्विक स्तर पर जलवायु नीतियों में पारदर्शिता बढ़ाना।

· उपयोग किए गए संकेतक:

1. जी.एच.जी. उत्सर्जन
2. नवीकरणीय ऊर्जा
3. ऊर्जा उपयोग
4. जलवायु नीति

· शीर्ष रैंकिंग वाले देश:

o किसी भी देश को समग्र रूप से बहुत उच्च रेटिंग नहीं मिली।

○ डेनमार्क इस वर्ष के सी.सी.पी.आई. में अपनी 4वीं रैंकिंग रखता है तथा सर्वेक्षण किए गए सभी देशों में फिर से सर्वोच्च रैंक पर है। (कोई भी देश शीर्ष 3 में नहीं आया)

सी.सी.पी.आई. 2025 में भारत का प्रदर्शन:

- समग्र रैंक: 10वां, सर्वोच्च प्रदर्शन करने वालों में से।
- कुल मिलाकर, सर्वेक्षण किए गए 64 सी.सी.पी.आई. देशों (ई.यू. सहित) में से केवल 22 ही सही रास्ते पर हैं, जबकि 42 पीछे हैं। भारत और यूनाइटेड किंगडम दो ऐसे देश हैं जो सही रास्ते पर हैं।
- श्रेणी रेटिंग:
 - जीएचजी उत्सर्जन: उच्च
 - ऊर्जा उपयोग: उच्च
 - जलवायु नीति: मध्यम
 - नवीकरणीय ऊर्जा: कम
- ताकत:
 - तेजी से नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार, विशेष रूप से बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा परियोजनाओं में।
 - ऊर्जा दक्षता मानकों और इलेक्ट्रिक वाहन तैनाती की शुरुआत।
 - सबसे अधिक आबादी वाला देश होने के बावजूद प्रति व्यक्ति कम उत्सर्जन और ऊर्जा उपयोग।
- चुनौतियाँ:
 - धीमी चरणबद्ध प्रगति के साथ कोयले पर भारी निर्भरता।
 - जलवायु लक्ष्यों में परिवहन, आवास और पानी जैसे क्षेत्रों का सीमित समावेश।

केन्द्रापसारक प्रक्रिया और यूरेनियम संवर्धन

ईरान ने संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) द्वारा निंदा प्रस्ताव के जवाब में उन्नत सेंट्रीफ्यूज लॉन्च करने की योजना की घोषणा की, जिससे उसके परमाणु कार्यक्रम पर तनाव बढ़ गया।

सेंट्रीफ्यूजल प्रक्रिया के बारे में:

- परिभाषा: सेंट्रीफ्यूज यूरेनियम गैस को उच्च गति पर घुमाते हैं, जिससे विखंडनीय आइसोटोप U-235 की सांद्रता में वृद्धि करके यूरेनियम को समृद्ध किया जा सकता है।
- उपयोग: कम समृद्ध यूरेनियम (LEU) का उपयोग रिएक्टरों के लिए किया जाता है, जबकि अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम (HEU) का उपयोग परमाणु हथियारों के लिए किया जा सकता है।
- दक्षता: उन्नत सेंट्रीफ्यूज यूरेनियम को तेजी से समृद्ध करते हैं और पुराने डिजाइनों की तुलना में कम मशीनों की आवश्यकता होती है।

· उत्पत्ति: ईरान का सेंट्रीफ्यूज कार्यक्रम 1980 के दशक में ए.क्यू. खान के प्रसार नेटवर्क से प्राप्त डिजाइनों और घटकों का उपयोग करके शुरू हुआ था।

· अंतर्राष्ट्रीय चिंताएँ: यह प्रक्रिया अपने दोहरे उपयोग की प्रकृति के कारण परमाणु हथियारों के विकास की आशंकाएँ बढ़ाती है।

यूरेनियम संवर्धन के बारे में:

· परिभाषा: संवर्धन यूरेनियम में यू-235 आइसोटोप के अनुपात को बढ़ाने की प्रक्रिया है ताकि इसे परमाणु रिएक्टरों या हथियारों में उपयोग के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।

· प्राकृतिक यूरेनियम संरचना: इसमें 0.7% यू-235 (विखंडनीय आइसोटोप) और 99.3% यू-238 (गैर-विखंडनीय) होता है।

· उद्देश्य: मानक परमाणु रिएक्टरों (LEU) के लिए U-235 सांद्रता को 0.7% से 3-5% या विशेष रिएक्टरों (HALEU) के लिए 20% तक बढ़ाता है।

· विखंडन प्रक्रिया: रिएक्टरों में ऊर्जा उत्पादन के लिए ऊष्मा उत्पन्न करने के लिए U-235 परमाणु विखंडन से गुजरता है।

· संवर्धन के तरीके: गैस सेंट्रीफ्यूज और गैसीय प्रसार जैसी आइसोटोप पृथक्करण तकनीकों आमतौर पर उपयोग की जाती हैं।

उच्च-ऊंचाई की बीमारी

उत्तराखंड में हाल ही में एक ट्रेकर की सांस की विफलता के कारण हुई मौत हिमालय में उच्च-ऊंचाई की बीमारी से उत्पन्न गंभीर खतरों को उजागर करती है।

उच्च-ऊंचाई की बीमारी क्या है?

· परिभाषा: उच्च-ऊंचाई की बीमारी, जिसे एक्यूट माउंटेन सिकनेस (AMS) के रूप में भी जाना जाता है, तब होती है जब शरीर 8,000 फीट (2,400 मीटर) से अधिक की ऊंचाई पर कम ऑक्सीजन के स्तर के अनुकूल होने के लिए संघर्ष करता है।

· प्रकार:

○ HAPE: उच्च-ऊंचाई फुफ्फुसीय एडिमा (फेफड़ों में द्रव)।

○ HACE: उच्च-ऊंचाई सेरेब्रल एडिमा (मस्तिष्क में द्रव)।

· लक्षण: सिरदर्द, मतली, थकान, सांस की तकलीफ, भ्रम और, गंभीर मामलों में, कोमा।

ऐसा क्यों होता है?

· कम ऑक्सीजन का स्तर: हवा में कम ऑक्सीजन शरीर के ऊतकों में हाइपोक्सिया की ओर ले जाती है।

· शारीरिक तनाव:

○ हाइपरवेंटिलेशन से सांस लेने की दर बढ़ जाती है।

○ लाल रक्त कोशिका के उत्पादन में वृद्धि के कारण गाढ़ा रक्त हृदय पर दबाव डालता है।

· तेजी से चढ़ना: बिना अनुकूलन के बहुत तेज़ी से चढ़ना जोखिम को बढ़ाता है।

निवारक और शमन उपाय:

- धीरे-धीरे चढ़ना:
- 3,000 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर हर 3-4 दिन में आराम करें।
- प्रतिदिन 500 मीटर से अधिक ऊँचाई पर सोने से बचें।
- दवाएँ:
- एसिटॉज़ोलैमाइड: अनुकूलन को बढ़ाता है।
- डेक्सामेथासोन: गंभीर सूजन को कम करता है।
- निफ़ेडिपिन: HAPE से ग्रस्त लोगों के लिए निवारक।

अष्टमुडी झील

केरल की अष्टमुडी झील, एक रामसर साइट है, जो प्रदूषण और आवास क्षरण से पारिस्थितिक खतरों का सामना करती है हाल ही में शैवाल के खिलने से मछलियों की मृत्यु ने जैव विविधता और स्थानीय आजीविका को खतरे में डाल दिया है। समाचार के बारे में अधिक जानकारी: • मुद्दे: ○ प्रदूषण: सीवेज डिस्चार्ज, प्लास्टिक डंपिंग और अवैध अपशिष्ट निपटान बड़े पैमाने पर हैं। ○ अतिक्रमण: अवैध निर्माण जल प्रवाह को अवरुद्ध करते हैं और आवासों को नष्ट करते हैं। ○ माइक्रोप्लास्टिक: मछली, शंख और तलछट में प्रदूषण के उच्च स्तर का पता चला है, जो जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। ○ जलकुंभी: आक्रामक पौधों के प्रसार से मछली पकड़ने की गतिविधियाँ सीमित हो जाती हैं। • शैवाल खिलने का प्रभाव: ○ पोषक तत्वों की अधिकता से ऑक्सीजन की कमी होती है, जिससे जलीय प्रजातियों का दम घुटता है। ○ स्ट्रेप्टोकोकी और ई. कोली संदूषण गंभीर सीवेज प्रदूषण की ओर इशारा करता है। ○ मछुआरों और पिंजरे के किसानों के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होता है। अष्टमुडी झील के बारे में: • स्थान: केरल के कोल्लम जिले में स्थित; इसका नाम इसकी आठ परस्पर जुड़ी भुजाओं ("अष्टमुडी") के कारण रखा गया है। • महत्व:

○ केरल की दूसरी सबसे बड़ी झील।

○ 2002 में अंतर्राष्ट्रीय महत्व की रामसर वेटलैंड के रूप में नामित

○ स्थानीय मछुआरों के लिए आजीविका का प्रमुख स्रोत।

· जल विज्ञान: कल्लदा नदी द्वारा पोषित, नींदकारा मुहाना के माध्यम से अरब सागर से जुड़ती है।

· ऐतिहासिक महत्व: 14वीं शताब्दी के दौरान एक प्रमुख बंदरगाह शहर; मोरक्को के खोजकर्ता इब्र बतूता के यात्रा अभिलेखों में उल्लेख किया गया है।

· जैव विविधता: मैंग्रोव प्रजातियों से समृद्ध, जिसमें सिज़ीगियम ट्रावनकोरिकम और कैलामस रोटांग जैसी लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं।